हाथ की कढ़ाई

प्रशिक्षण की अवधि - 6 महीने (प्रायः 825 घंटे)

<u>सैद्धान्तिक</u>

१. हाथ कढ़ाई कला का परिचय, इसकी उपयोगिता तथा इससे लाभ। इससे घर की सजावट का महत्व। प्राचीन कढ़ाई कला एवं आधुनिक कढ़ाई कला में अंतर।

२. कढ़ाई कला के काम में आनेवाले धागों - सिल्कन, सूती, क्रैचेट के धागों, लच्छियां तथा शिफॉन धागे, ईत्यादि के बारे में जानकारी, उनका वर्गीकरण, उनकी विलक्षणता तथा उनका प्रयोग। कलावस्तु (अपहला) तथा कढ़ाई के ऊन की जानकारी एवं उनका प्रयोग।

३. कढ़ाई कला के काम में आनेवाले उपकरणों का वर्णन, उनका कार्य तथा प्रयोग, उनकी हिफाजत। कढ़ाई कला के काम में आनेवाली सुईयों के प्रकार तथा उनका प्रयोग।

४. कढ़ाई के आधार - कपड़ों की जानकारी, उनके व्यवसायिक नाम, उनकी रचना और उसका प्रभाव, उनका चुनाव। विभिन्न चीजों के लिए कपड़े, उसके प्रकार (क्वालिटी) तथा रंगों का चुनाव। कपड़े तथा पैटर्न के इकाईयों का सामंजस्य।

५. नमूने की डिजाईन ड्रॉईंग करने की कला एवं नमूना ड्रेस करना। ड्रेस करने की विधियां एवं आवश्यक सामग्री। कढ़ाई के नमूने, पोशाक के अनुसार उनके चुनाव का ज्ञान। साधारण एवं कठिन नमूने, बड़े एवं छोटे नमूने। पोशाक के अनुरूप नमूने को बड़ा एवं छोटा करना। कढ़ाई कला के शिक्षार्थियों को ड्रॉईंग की आवश्यकता तथा इस ज्ञान से लाभ।

६. विभिन्न प्रकार के पत्ते, फूल, प्राकृतिक दृश्य, कोने के नमूने, गोल नमूने, बॉर्डर के नमूने के बारे में जानकारी तथा प्रयोग। विभिन्न चीजों एवं पोशाकों पर कढ़ाई करने का नियम तथा कढ़ाई करते समय ध्यान देने योग्य बातें।

७. कढ़ाई कला में रंगों का चुनाव एवं मिलान का ज्ञान। कपड़े के रंग के अनुरूप धागों के रंगों का मिलान, इस ज्ञान से लाभ। नमूने, धागे के रंग तथा कपड़ा - तीनों के उचित चुनाव का मिश्रण।

८. काश्मीर की काश्मीरी कढ़ाई, लखनउ के चिकन वर्क, सिन्ध की सिन्धी कढ़ाई, राजस्थान का एपलिक वर्क तथा बंगाल के ढाका एवं काथा स्टिच की विशेषता, प्रचलन तथा लोकप्रियता।

९. वस्त्रों पर लगे विभिन्न दाग छुड़ाने के नियम। कढ़ी हुई चीजों को धोने तथा लोहा करने की विधि।

१०. हाथ कढ़ाई के सभी स्टिचों, सलमा सितार, सीप, मोती तथा कलावत्तु की कढ़ाई का वर्णन (टिप्पणी) तथा उनका उचित प्रयोग।

११. मूल्य निर्धारण करना। तैयार सामान के बाजार भाव के अनुसार बिक्री मूल्य निर्धारण करना।

हाथ की कढ़ाई

क्रियात्मक

१. ड्रॉईंग करना तथा कपड़े पर ट्रेस करना, विभिन्न टाकों से बॉर्डर बनाना।

२. हाथ कढ़ाई के निम्नलिखित टांके का प्रयोगात्मक कार्य -

रनिंग स्टिच तथा बैक स्टिच, उनमें डिजाईन, स्टेप स्टिच (उल्टी बखिया), सैटिन स्टिच, लौंग एण्ड शौर्ट स्टिच, हालवीन स्टिच, स्पाईडर तथा डबल स्पाईडर स्टिच, फ्लाई तथा वाई स्टिच, फिश बोन स्टिच, हेरिंग बोन तथा डबल हेरिंग बोन स्टिच, फेदर तथा डबल फेदर स्टिच, लूप स्टिच, चेन तथा डबल चेन स्टिच, मैजिक चेन तथा कई प्रकार के चेन स्टिच जैसे इसप्लिट चेन, ओपेन चेन, डिसटेंट चेन, रोजडी चेन, जिग-जैग चेन, फेदर चेन, केबल चेन, इत्यादि, लेजी-डेजी स्टिच, फ्रेंच नोट तथा फ्रेंच-फ्लावर स्टिच, धनियां तथा जो स्टिच, काउचिन, आइलेट होल स्टिच, अमानियन स्टिच, चोप स्टिच, स्नेल तथा डबल स्नेल स्टिच, काश्मीरी स्टिच, सिन्धी कढ़ाई, चिकन वर्क, ढ़ाका तथा काथा स्टिच, ब्लैंकेट तथा बटन होल स्टिच, पिलो, एजिंग तथा डबल एजिंग, क्रॉस तथा डबल क्रॉस स्टिच, शेप स्टिच, बुलिदन स्टिच, शैडो वर्क, कट वर्क, नेट वर्क, हेम स्टिच, लच्छी, ऊन तथा रिबन स्टिच, सलमा सितारा तथा सीप का काम, कलावस्तु तथा मोती का काम, टाई का काम, मोनोग्राम, कीप स्टिच तथा मन्दिर स्टिच, इत्यादि।

३. विभिन्न प्रकार के फूल, पत्ती, पशु पक्षी, प्राकृतिक दृश्य, सुन्दर डिजाईन के गोल, तिकोने तथा चौकोर नमूने को उपर्युक्त स्टिचों से बनाना तथा ऊनमें धागे के रंग का उचित संमिश्रण करना।

४. हैनिकम तथा स्मोकिंग (कई एक स्टिच द्वारा) सीसा लगाना।

५. ड्रानथ्रेड वर्क (तारकशी का काम), एपलिक वर्क तथा पैच वर्क।

उत्पादन कार्य - (सुन्दर एवं उपयुक्त स्टिचों द्वारा बनाये जायेंगे)

१. तकिया खोल, चादर, बेड कवर, परदा, टेबुल क्लॉथ, ट्रे क्लॉथ, टेबुल मैट, टिकोजी, नैपकिन्स, ट्रे कवर, रेडियो कवर, जग तथा जार का कवर, ड्रेसिंग टेबुल सेट्स, स्टूल कवर पर कढ़ाई।

२. सोफा सेट, चेयर कवर, चेयर बैक, कुशन कवर, अंगीठी पोश, डाइनिंग टेबुल-क्लॉथ पर कढ़ाई।

३. रूमाल, बिब, बच्चों का एप्रन, बेबी फ्रॉक, बाबा सूट, गर्ल्स फ्रॉक, स्लैक्स पर उपयुक्त स्टिचों से कढ़ाई।

४. पेटीकोट, साड़ी, ब्लाउज पीस, दुप्ट्टा, जनानी कमीज पर सुन्दर स्टिच कढ़ाई।

५. बटुआ तथा लेडीज पर्स, मफलर तथा शॉल पर कढ़ाई।

बुनाई (मशीन तथा हाथ से)

प्रशिक्षण की अवधि - 6 महीने (प्रायः 825 घंटे)

सैद्धान्तिक

१. बुनाई कला का परिचय, इससे लाभ, इसकी आवश्यकता तथा उपयोगिता। घरेलू उद्योग के दृष्टिकोण से इसका महत्व।

२. बुनाई के ऊन, ऊन का इतिहास, उनका वर्गीकरण, परिभाषा, उनके गुण तथा प्रयोग। प्लाई संबंधी गणना एवं परिभाषा। सिंगल निट, हेवी निट तथा डबल निट ऊन में अंतर। ऊन को ठीक अवस्था में रखना। ऊन की मजबूती, ऐंठन (टुईस्ट) तथा लचीलापन। आपूर्ति के प्रमुख स्रोत, समानता तथा रंग का पक्का होना।

३. बुनाई मशीन, उनका नामकरण तथा प्रयोग, यंत्र चलाने की विधि, उसके प्रत्येक पुर्जों का नाम, उनके काम का विवरण तथा मशीन में उन्हें लगाने का तरीका, उनका व्यवहार। बुनाई मशीन के विभिन्न गौजों के लिए उचित गणना (प्लाई), उनका चुनाव। बुनाई मशीन से लाभ एवं उनकी सुरक्षा। व्यवसायिक दृष्टिकोण से इसकी उपयोगिता।

४. बुनाई कला के काम में आने वाली आवश्यक सामग्रियों का वर्णन एवं उनका प्रयोग। हाथ सलाईयों के प्रकार, उनका वर्गीकरण, ऊन के प्लाई के अनुरूप सलाईयों का चुनाव तथा प्रयोग।

५. ऊन की चीजें बनाने की विधि, वस्त्रों के अनुरूप उनका चुनाव, ऊन के गोले बनाने एवं गाढ़ देने की विधि, फैशन के अनुरूप परिष्कृत एवं तैयार करना, गोल तथा बिना जोड़ (सिलाई) की बुनाई, बुनाई में प्रयोग होने वाली स्टिचें, उनका विवरण तथा प्रयोग, बुनी हुई चीजों की सिलाई, उनके परिमाण की गणना।

६. बुनाई के वस्त्र, उनका नाम लेने का तरीका, बुनाई वस्त्र के व्यवसायिक नाम तथा विवरण, उनसे बनावट (स्टाईल) तथा उसका प्रमाणिक व्याख्या, बुनाई वस्त्र में लेस का प्रयोग तथा बुने हुए वस्त्र में कढ़ाई करने का तरीका, बुने हुए वस्त्र में दोष आना तथा उसे दूर करने का तरीका।

७. ऊन के रंग तथा प्रकार (डिजाईन), रंगों के सिद्धांत, रंगों का मिलान करना (कलर कॉम्बीनेशन), रंगों की एकरूपता तथा विपरीत रंगों का सिद्धांत, विभिन्न प्रकार के नमूने (पैटर्न), जैसे - सादे पैटर्न, फ्लेविल पैटर्न, जाली पैटर्न, जिग-जैग पैटर्न, ऑस्केट पैटर्न, धारीदार पैटर्न, दो रंगों के पैटर्न, ईत्यादि का वर्गीकरण एवं वस्त्रों के अनुरूप उनका चुनाव तथा प्रयोग। बॉर्डर तथा किनारा बुनने के विभिन्न तरीकों का ज्ञान।

८. बुने हुए वस्त्रों को धोने, सुखाने तथा लोहा करने की विधि, बुनी हुई चीजों को सुरक्षित रखने की विधि। ऊनी वस्त्रों को रफ्फू करना एवं पुराने ऊनी वस्त्रों की मरम्मत।

९. क्रुशिया बुनाई की व्यापकता तथा उससे लाभ, क्रुशिया बुनाई के लेस तथा विभिन्न वस्त्र एवं उनका प्रयोग।

१०. क्रुशिया बुनाई के काम में आने वाले सिल्केन तथा सूती धागे, उनका विवरण तथा प्रयोग। क्रुशिया बुनाई के स्टिच तथा नमूने।

११. ऊन तथा अन्य कच्चे माल का दाम लगाना, बुने हुए वस्त्र का मुल्य निर्धारित करना, तैयार सामान की बिक्री करना।

बुनाई (मशीन तथा हाथ से)

क्रियात्मक

व्यवहारिक प्रशिक्षण

१. ऊन के रेशों (प्लाई) का विभाजन एवं जांच करना, ऊन का गोला बनाना। विभिन्न प्रकार के नमूने (पैटर्न) बनाना।

२. बुनाई मशीन का व्यवहारिक ज्ञान तथा सभी यंत्रों की जानकारी एवं प्रयोग। मशीन पर तरह-तरह के सादे तथा फैन्सी डिजाईन बनाना।

३. बुने हुए वस्त्र पर कढ़ाई करना। विभिन्न प्रकार के कॉलर, बॉर्डर, आस्तीन तथा गला बनाना। बुने हुए वस्त्र को रफ्फू करना।

उत्पादन कार्य

१. बच्चों के वस्त्र

बेबी मोजा, बेबी जूता, बेबी टोपी, बेनिट, बेबी सूट (कोट, निक्कर, मोजा तथा टोपी), लेगिंग तथा लेगिंग सूट, बेबी स्विम सूट, बेबी कोट, मैटिनी कोट, निक्कर या पैंट, कोट, बेबी फ्रॉक, गर्ल्स फ्रॉक, कोट फ्रॉक, बच्चों के आधी तथा पूरी आस्तीन के स्वेटर, बेलबाट्स, इत्यादि।

२. स्त्रियों के वस्त्र

ब्लाउज (आधी आस्तीन तथा पूरी आस्तीन के), शॉल, कैप, कार्डिगन। लड़कियों के पूरे बॉह का स्वेटर, कोट, स्कार्फ, इत्यादि।

३. पुरूषों के वस्त्र

चार सलाई का मोजा, दस्ताना, मफलर, लड़कों के हाफ तथा फुल स्वेटर, लड़कों के जर्सी तथा कार्डिगन, बड़ा (जेन्ट्स) हाफ तथा फुल स्वेटर, बड़ा जर्सी एवं कार्डिगन, हाईनेक पुल-ओवर।

४. क्रोशिया बुनाई

पेटीकोट का लेस, साड़ी का लेस, टेबुल-क्लॉथ तथा ट्रे-क्लॉथ का किनारा, ग्लास तथा अन्य बर्तन के ढक्कन, ट्रे कवर तथा थाल पोश, ४ पिन से विभिन्न चीजें बनाना।